edit:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:26 PM Page 184

दैनिक जागरण
रविवार 14 मार्च 2010

नानाजी की विरासत

दैनिक जागरण
नानाजी की विरासत

प्रखर राजनेता एवं प्रतिबद्ध समाजसेवी नानाजी देशमुख के निधन के उपरांत सभी ने अपनी-अपनी तरह से उनका स्मरण किया और उनके योगदान पर प्रकाश डाला, लेकिन अभी तक किसी की ओर से यह सुनने को नहीं मिला कि वह ग्रामीण विकास के लिए उनके तौर - तरीकों को अपनाएगा। अच्छा होता कि ऐसी कोई घोषणा उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से की जाती, क्योंकि उन्होंने एक तरह से इसी राज्य को अपनी कर्मभूमि बनाई और यहां के कुछ अति पिछड़े गांवों को अपने पैरों पर खड़ा किया। दुर्भाग्य से इसके आसार इसलिए कम हैं, क्योंकि नानाजी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबद्ध थे और यह किसी से छिपा नहीं कि वर्तमान में महापुरुषों को अपने-अपने राजनीतिक चश्मे से देखने की परिपाटी चल निकली है। इसी कारण इसकी अपेक्षा नहीं की जा सकती कि केंद्र सरकार नानाजी के कार्यों का अनुसरण करने पर विचार करेगी। यह ठीक है कि संसद के दोनों सदनों में उनका स्मरण किया गया, लेकिन आखिर ऐसे स्मरण का क्या अर्थ जिसका सिर्फ शाब्दिक महत्व हो?

नानाजी के अप्रतिम संस्कार में भाग लेने पहुंचे भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी ने जब यह कहा कि उनके उपायों से ही गांवों में खुशहाली आएगी और दीनदयाल उपाध्याय का अंत्योदय का सपना साकार होगा तो उससे सभी भाजपा नेताओं ने सहमति जताई, लेकिन सिर्फ मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इतना भर कहा कि उनकी सरकार नानाजी के कार्यों के विस्तार में पूरा सहयोग करेगी। बेहतर होता कि वह ऐसी कोई घोषणा करते कि उनकी सरकार नीतिगत स्तर पर नानाजी के कार्यों का अनुसरण करेगी। आखिर राज्य सरकारें गांवों के उत्थान के लिए वैसे प्रयास क्यों नहीं कर सकतीं, जैसे नानाजी ने किए और उनमें चमत्कारिक सफलता हासिल की? नानाजी के तौर तरीके तो शासन व्यवस्था में समाहित होने चाहिए, क्योंकि यह किसी से छिपा नहीं कि उन्होंने ऐसे काम कर दिखाए जो केंद्र और राज्य सरकारें पिछले 63 वर्षों में भी नहीं कर सकीं। देश के सबसे पिछड़े इलाके को खुशहाल बनाना कोई सामान्य बात नहीं। यदि नानाजी के ग्रामोदय प्रयोग पर बड़े पैमाने पर अमल नहीं किया जाता तो यह कुल मिलाकर देश और प्रदेश का दुर्भाग्य ही होगा। नाना जी के अनुयायियों और उनकी सराहना करने वाले व्यक्तियों की यह नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि वे उनके बताए रास्ते पर चलें।

पाञ्चजन्य

नवदधीचि नानाजी

पाञ्चजन्य
नवदधीचि नानाजी

नानाजी नहीं रहे, यह विचार मन में आते ही मन विद्रोह कर उठता है, क्योंकि भले ही वह सदेह आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन नानाजी की जिजीविषा, उनकी दृढ़ संकल्पशक्ति और सेवा-साधना का मूर्त्तरूप उन्हें कभी हमारी स्मृतियों से ओझल नहीं होने देगा। एक साधारण से बालक चण्डिकादास की लोक-विभूषित नाना देशमुख बनने तक की जीवन-यात्रा इतनी प्रेरणास्पद है कि उसके संस्पर्श से असंख्य मन आल्हादित हो, उस पथ के अनुगामी बने। गोंडा का जयप्रभा ग्राम, चित्रकूट का ग्राम विकास प्रकल्प व ग्रामोदय विश्वविद्यालय तथा दिल्ली का दीनदयाल शोध संस्थान नानाजी की कल्पनाशीलता, योजकता और संगठनशक्ति के जीवंत रूप हैं। डा. हेडगेवार के सान्निध्य में परिपुष्ट हुआ स्वयंसेवकत्व राष्ट्र व समाजसेवा के व्रत के रूप में अंतिम श्वांस तक उनके जीवन की तपश्चर्या बनकर प्रस्फुटित होता रहा। यह प्रस्फुटन उनकी इतनी दीर्घायु होने पर भी उन्हें पूरी तरह चैतन्य व जीवंत बनाए हुए था। नानाजी एक कर्मयोगी थे, समाज और राष्ट्र जीवन के जिस क्षेत्र में भी वे दायित्व लेकर गए, प्राणपण से न केवल उसे पूर्ण किया, बल्कि ऐसे प्रतिमान गढ़ दिए कि मानो एक नया प्रेरणापुंज खड़ा हो गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में एक निस्पृह, निस्वार्थ, त्यागपूर्ण, बंधुत्वभाव से ओत-प्रोत, सेवाभावी जीवन जीने का जो संकल्प उनके मन में जागृत हुआ, उसे पूरी दृढ़ता से उन्होंने जीवनपर्यंत निभाया। कोई भी प्रलोभन उन्हें डिगा न सका, यहां तक कि सत्ता के मोहक आमंत्रण को भी उन्होंने ठुकरा दिया। लोकप्रियता के शिखर पर होते हुए भी न केवल उन्होंने मंत्रिपद को अस्वीकार किया, बल्कि राजनीति की मर्यादा बांधते हुए उन्होंने 60 वर्ष की आयु हो जाने के बाद स्वयं को राजनीति से मुक्त कर चंचितों, अभावग्रस्त ग्रामीणों की अहर्निश सेवा में समर्पित कर दिया।

आज जब जीवन की अंतिम सांस तक राजनेताओं में पदलिप्सा हिलोरें मारती रहती है और वे देशसेवा के नाम पर स्वार्थों की राजनीति में आकंठ डूबे रहते हैं, तब नानाजी के जीवन का यह घटनाक्रम निश्चय ही प्रेरणा का स्रोत है। इस सेवा-साधना में रत नानाजी ऋषितुल्य हो गए, दरिद्रनारायण की सेवा उनके जीवन का मूलमंत्र बन गई। गैररागनीतिक आधार पर उन्होंने जन सहयोग से कृषि, ग्राम विकास व शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे अनूठे प्रयोग सार्थक कर दिखाए कि उनके माध्यम से आज सैकड़ों गांवों के लाखों ग्रामीणों का जीवन स्वावलम्बन व आर्थिक उन्नयन का स्वाद चखकर भाव-विभोर है। गरीबों और संकटग्रस्त लोगों की करूण पुकार पर वे दौड़े चले जाते थे। ऐसे अनेक अंचलों में उन्होंने सेवा और विकास के जो स्वावलम्बी कार्य खड़े किए, वे आधुनिक विकास की वेतहाशा दौड़, जो अनेक प्रकार के विनाश को भी आमंत्रित कर रही है, के लिए एक मानक बन सकते हैं। वे स्पष्टत: यह मानते थे कि ग्रामीण आत्मनिर्भरता के बिना कोई विकास सार्थक नहीं हो सकता। आज विकास के नाम पर औद्योगीकरण व शहरीकरण का जो दंश हमारा समाज झेल रहा है, नानाजी ने उससे मुक्त विकास की अपनी सांस्कृतिक परम्परा के अनुरूप जैविक कृषि व स्वावलम्बी गांव का मंत्र देकर नई दिशा प्रदान की।

नानाजी स्वयंसेवक जीवन का आदर्श रूप थे। देश और समाज के उत्कर्ष के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने का व्रत उन्होंने अपने प्रत्यक्ष आचरण से पूर्ण कर दिखाया। इसी का परिणाम था कि नानाजी संघ विचार के कटु आलोचकों के भी प्रिय थे। उन्होंने अपने जीवन से यह सिद्ध कर दिखाया कि जिस संघपद्धति से निर्मित व्यक्तित्व यानी नानाजी जब उन्हें प्रिय हैं तो उन्हें गढ़ने वाली वह संघपद्धति यानी संघविचार कैसे त्याज्य हो सकता है। इसी का परिणाम था कि नानाजी से जुड़े अनेक लोग अपने दुराग्रहों को त्यागकर संघविचार के निकट आए। राजनीति में पं. दीनदयाल उपाध्याय के संस्कार को लेकर उन्होंने जो कदम बढ़ाया, उसके बाद निरंतर आगे बढ़ते हुए वे न केवल सब प्रकार के राजनीतिक कलुष से अपने को बचाए रहे, बल्कि सबके समक्ष राजनीतिक शुचिता का आदर्श प्रस्तुत किया। वे 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा लोकतंत्र की हत्या करते हुए आपातकाल के रूप में देश पर तानाशाही थोपने का अपने-अपने तरीके से विरोध कर रहे विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच कड़ी बन गए और लोकसंघर्ष का नायकत्व उन्हें मिला। जयप्रकाश नारायण की समग्र क्रांति के तो वे मुख्य रणनीतिकार थे। इसी में से देश में दूसरी आजादी के नाम से विख्यात लोकतंत्र की पुनस्स्थापना हो सकी। समाज के प्रति नानाजी की चिंता इतनी गहन थी कि वे अपने जीवन का क्षण-क्षण तो उसकी सेवा में अर्पित करते ही रहे, मृत्योपरांत उनकी पार्थिव देह भी समाज के स्वास्थ्य संवर्धन में सहायक हो, इसके लिए वे चिकित्सा शोध कार्य के हेतु अपनी देह दान करने का संकल्प भी कर गए। ऐसे नवदधीचि नानाजी को शत्-शत् नमन।